बाइसिकल मैन

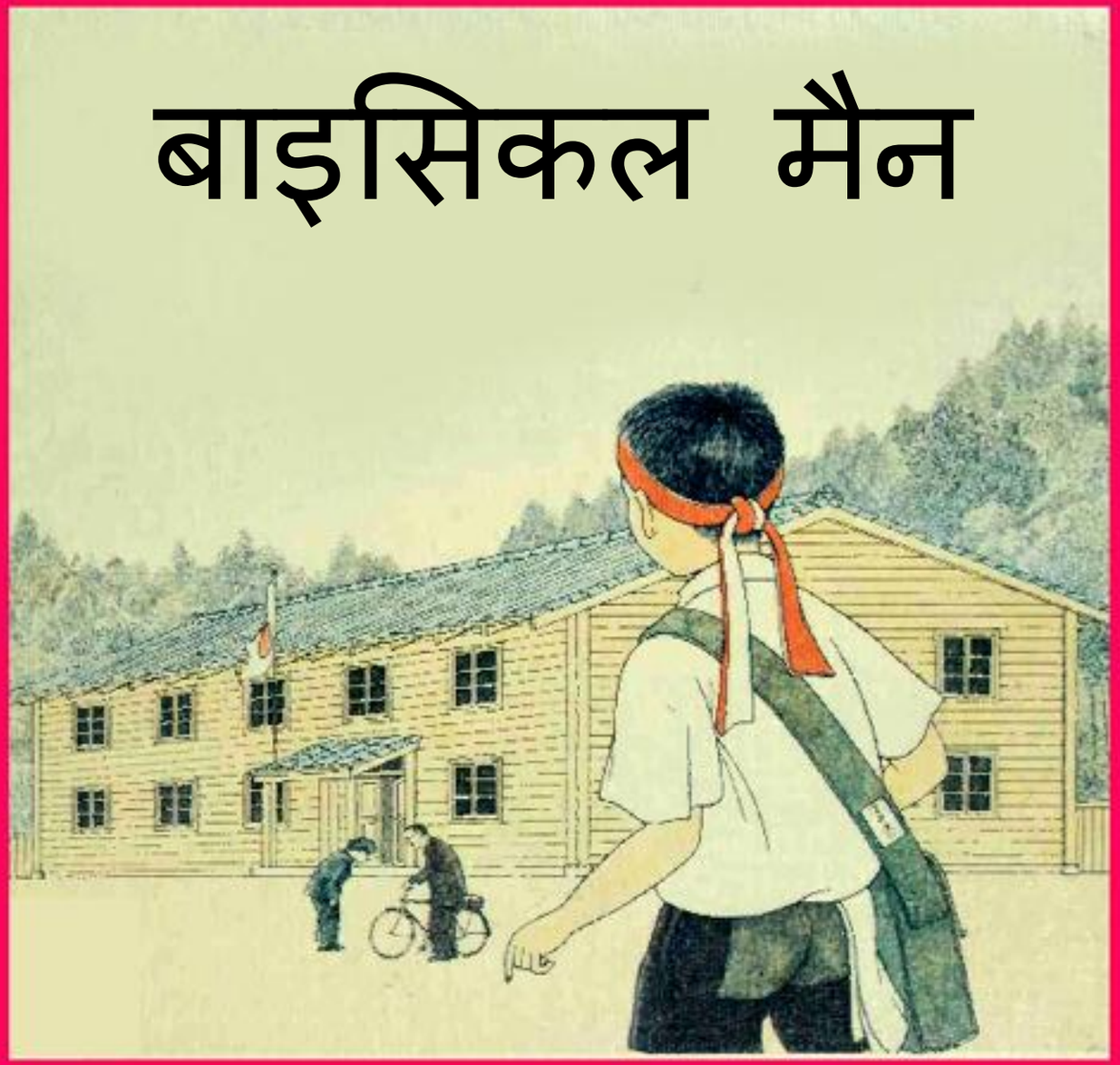

जब मैं छोटा लड़का था तब मैं जापान के दक्षिण द्वीप के एक स्कूल में पढ़ने के लिए जाया करता था. एक ऊंचे हरे-भरे पहाड़ के बीच में हमारे स्कूल की इमारत थी. इमारत लकड़ी की बनी थी जो समय बीतने के साथ मटमैली हो गई थी. तेज़ हवा के चलने पर पेड़ों से उफनती लहरों की आवाज़ आती थी और पुरानी जहाज़ की तरह स्कूल की इमारत चरमराने लगती थी. स्कूल के खेल के मैदान से नीचे नगर, बन्दरगाह में खड़े जहाज़ और झिलमिलाता सागर हमें दिखाई देता था.

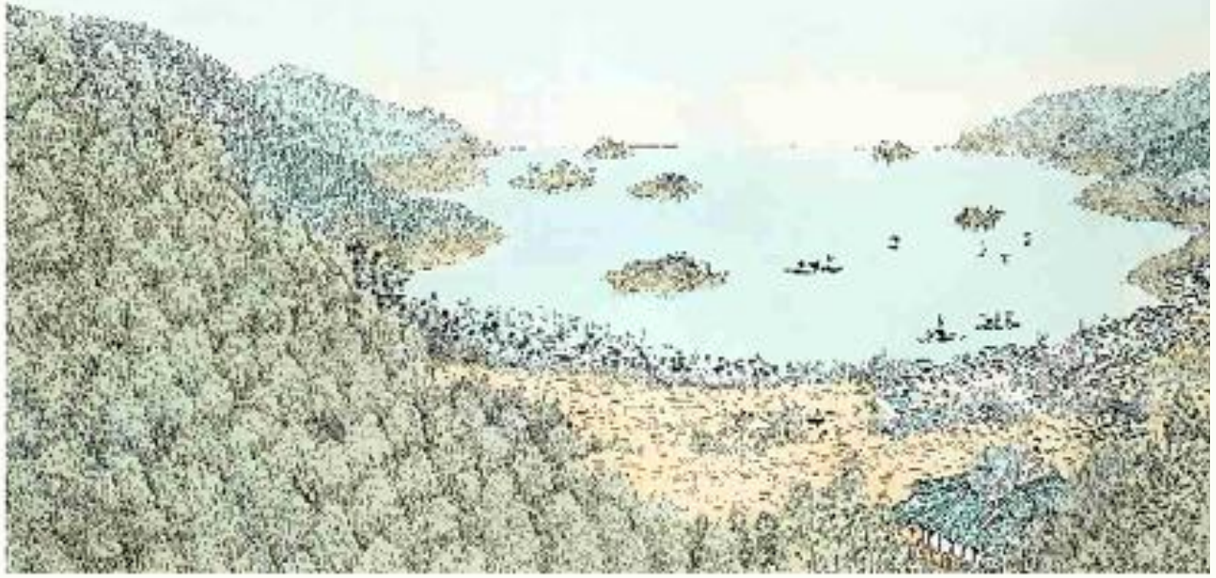

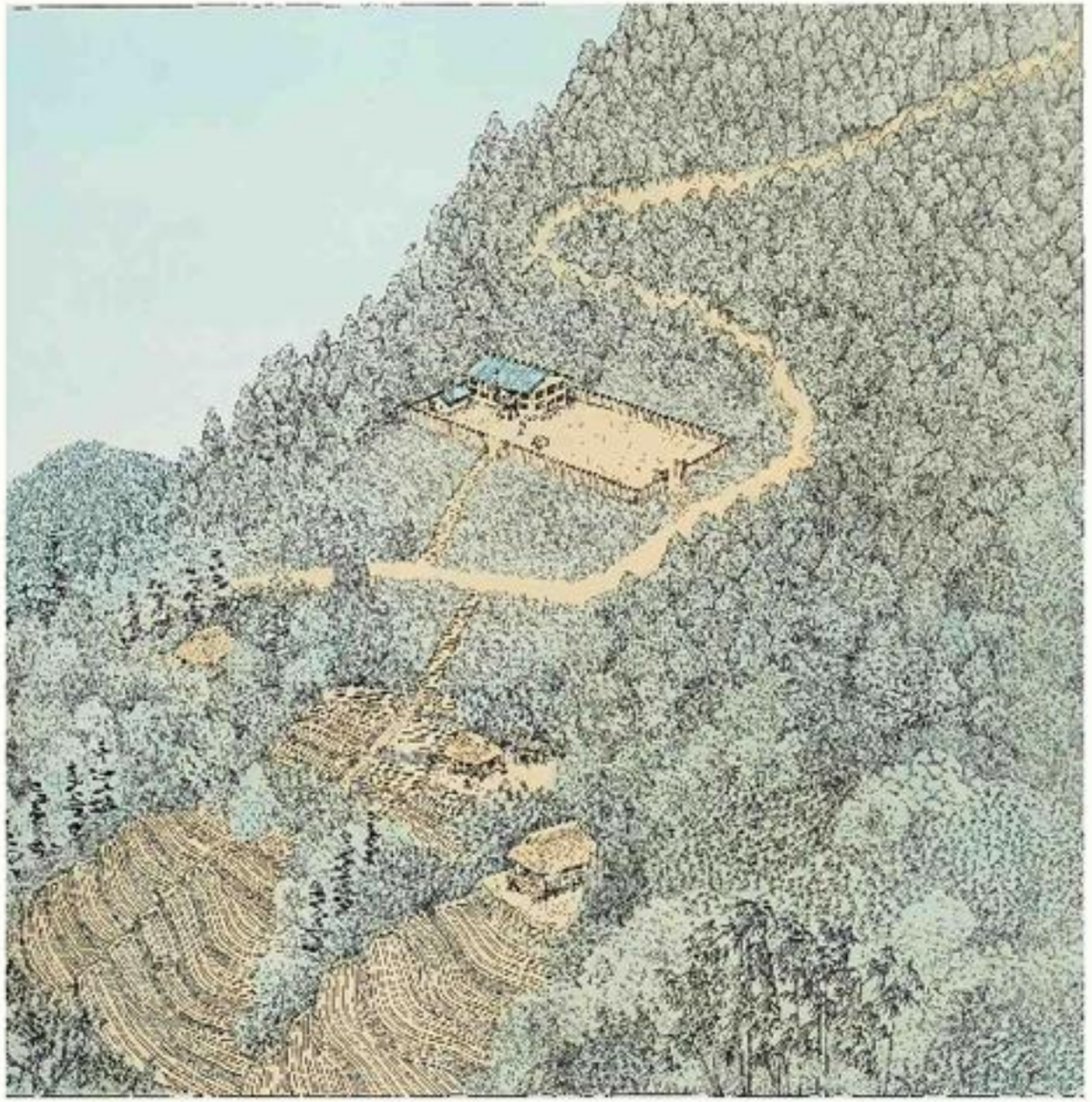

वसंत के एक दिन हमारे स्कूल में खेल दिवस था स्कूल की पहली घंटी बजने से पहले ही सारे बच्चे और अध्यापक खेल के मैदान में आ गये थे.

“क्या सब सिर पर बाँधने वाली पट्टी लाये हैं?” मिसेज़ मोरिता ने पूछा. वह पहली कक्षा की अध्यापिका थीं. हमने उत्साह के साथ अपनी-अपनी पट्टियाँ दिखाईं. पट्टियाँ एक तरफ से लाल और दूसरी तरफ से सफेद रंग की थीं.

“याद रहे, हम लाल टीम में हैं,” उन्होंने हम से कहा.

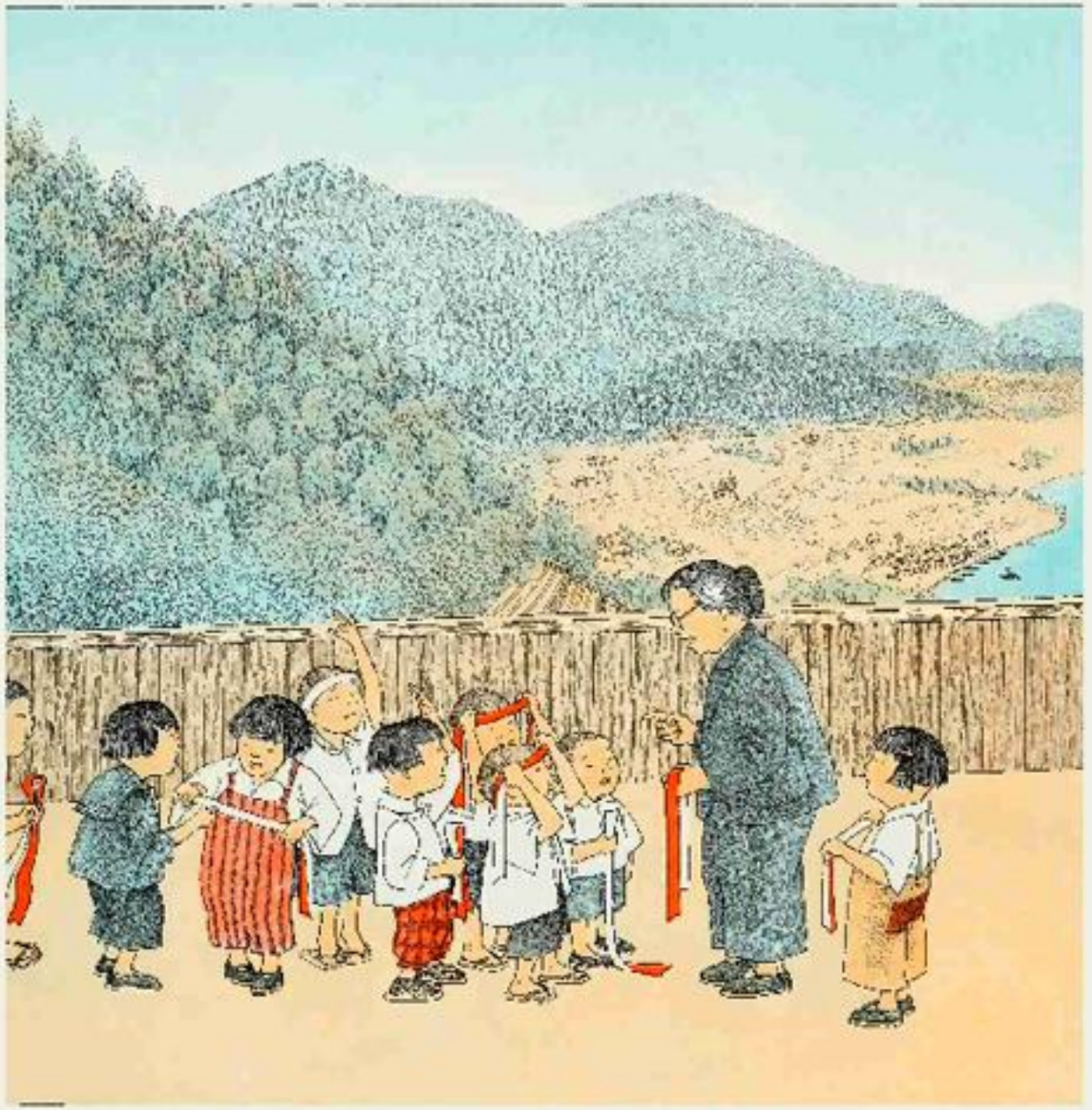

स्कूल में जितने भी झाड़ू थे उनसे हमने खेल के मैदान को साफ किया. बांस के खम्बों पर हमने झंडे और लहराती पताकायें बाँध दीं. चाक पाउडर से हमने ज़मीन पर सफेद लकीरें बना दीं.

सब के माता-पिता बड़े-बड़े लंच-बॉक्स और चाय से भरी केतलियाँ लिए स्कूल आ गये. दौड़ने के गोल मार्ग के चारों ओर अपनी चटाइयां बिछा कर वह सब बैठ गये.

सारी तैयारी हो जाने पर मिसेज़ मोरिता ने घंटी बजाई. नौ बज रहे थे. एक मंच पर खड़े हो कर प्रिंसिपल साहब ने कहा, “अभिभावको, बच्चो, और मेरे साथी अध्यापको, हमें याद रखना होगा कि हम खेल-कूद की भावना से यहाँ इकट्ठे हुए हैं. चाहे हमारी जीत हो या हार, हमें बस खेल का आनन्द लेना है.”

हम सब ने ज़ोर से तालियाँ बजाईं.

सबसे छोटे बच्चे पहले दौड़े. बारी-बारी छह बच्चे आरम्भ-रेखा पर खड़े हो गये.

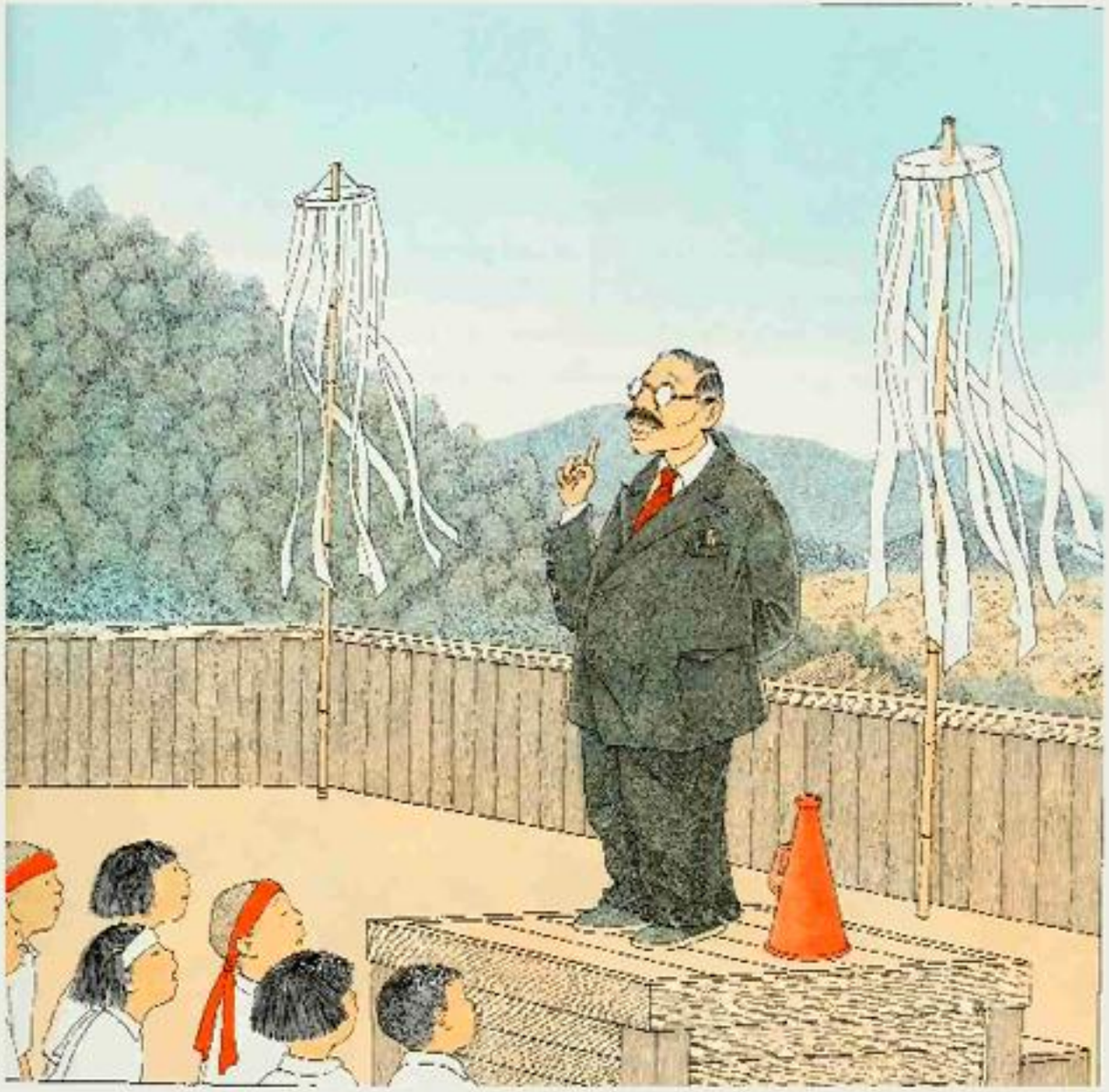

“रैडी, स्टेडी, गो!” हमारे आर्ट टीचर, मिस्टर ओका ने ऊंची आवाज़ में कहा. हम पहली कक्षा के छात्र मार्ग पर तेज़ी से दौड़ने लगे. हमारे माता-पिता और अध्यापक साथ-साथ दौड़ने लगे और चिल्ला-चिल्ला कर हमें प्रोत्साहित करने लगे. बड़े बच्चे झंडियाँ और सिर की पट्टियाँ लहराने लगे और इतनी ऊंची आवाज़ में चिल्लाने लगे कि उनका शोर, बादलों की गर्जन समान, पहाड़ में गूँजने लगा.

दौड़ के विजेता जज की मेज़ के पास गये और प्रिंसिपल से अपने पुरस्कार प्राप्त किये. पुरस्कार सफेद कागज़ में लिपटे, सुनहरी डोरी से बंधे थे. भीतर संतरे और चावल के केक और पेंसिलें थीं.

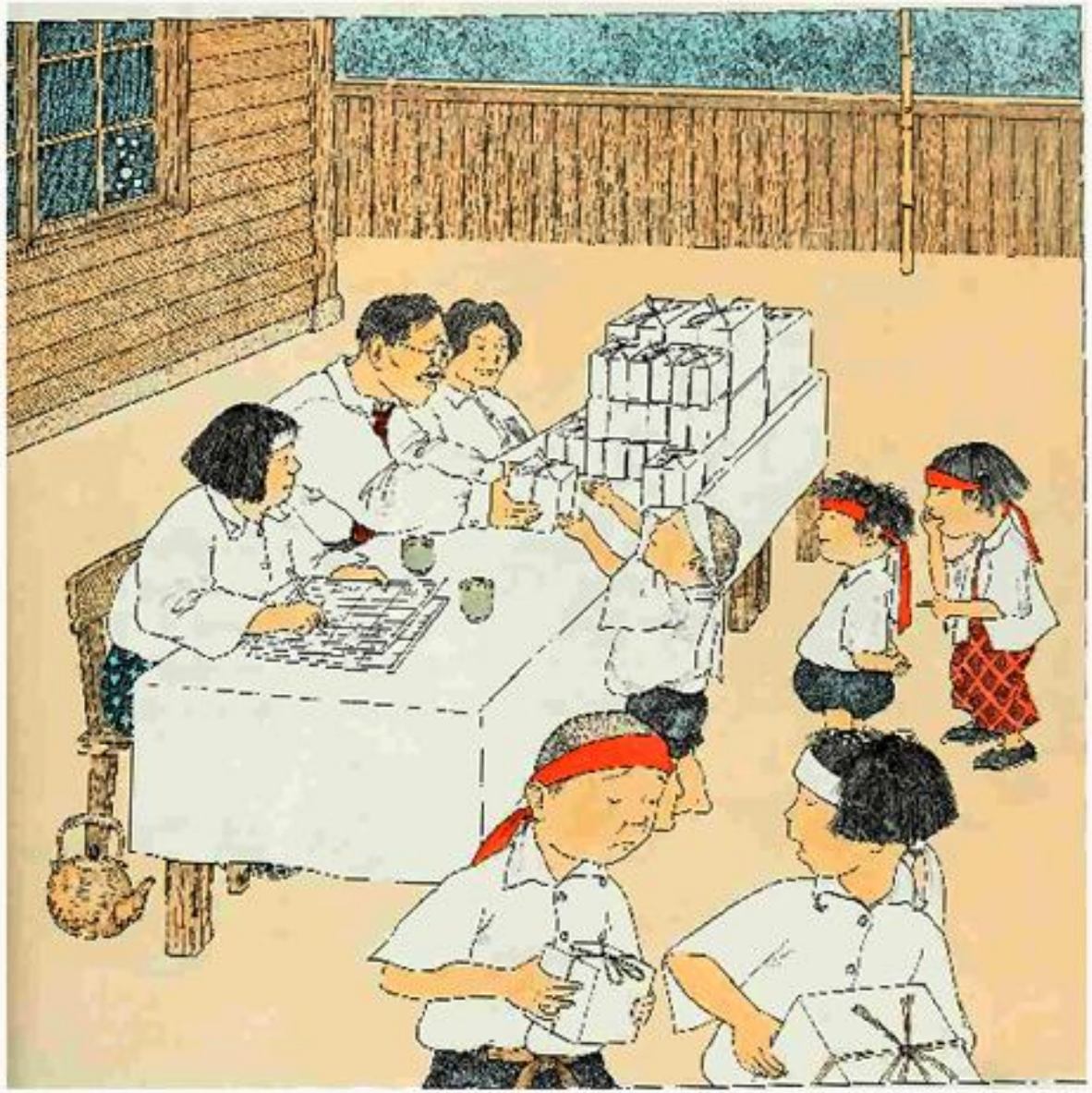

जिस समय छठी कक्षा के बच्चों की दौड़ समाप्त हुई दोपहर के भोजन का समय हो गया. और खेल-दिवस का यह सबसे अच्छा भाग था. मेरी माँ दो दिनों से सबके लिए अच्छी चीजें पका रही थी. लंच-बॉक्स के अलग-अलग डिब्बों में खरबूज़े की छाल का अचार और अंडे के रोल्स, मसालेदार चावल और मछली के केक थे. सेब और आड़ू और कई प्रकार की मिठाइयाँ भी थीं.

दोपहर के बाद हमने रस्साकशी की और पीठ पर बच्चों को उठा कर दौड़े. इसके बाद बड़े लोगों की रेस हुई.

माता-पिता और अध्यापकों की जोड़ियाँ बनाई गईं. उनके टखने आपस में बाँध दिए गये. वह गोल मार्ग पर उछल-उछल कर भागने लगे. भागते हुए जब वह लड़खड़ाते और एक-दूसरे के ऊपर गिरते तो हम सब ख़ुशी से चिल्लाने लगते.

मिसेज़ मोरिता और किसी के पिता की जोड़ी को हम प्रोत्साहित कर रहे थे कि खेल के मैदान में खामोशी छा गई. हम सब ने हिलना-डुलना और बातें करना बंद कर दिया और गेट की तरफ एकटक देखने लगे.

दो अजनबी मैदान की बाड़ के साथ खड़े थे और हमें देख रहे थे. वह अमरीकी सैनिक थे. उन में से एक गोरा था और उसके लाल बाल आग के समान चमक रहे थे. दूसरे आदमी का चेहरा कोयले की तरह काला था. उन्होंने गहरे रंग की वर्दी और नेकटाई पहन रखा थी. सिर पर टोपी थी और बाँह पर लाल रंग के फीते लगे थे. उनके पास बंदूकें नहीं थीं.

“देखो वह कितना काला है!”

“उसके लाल रंग के बाल देखे!” हम फुसफुसा कर बोल रहे थे.

कुछ समय पहले ही युद्ध समाप्त हुआ था, एक वर्ष भी न बीता था. बन्दरगाह में अमरीकी सैनिकों की छावनी थी. लेकिन हमने किसी सैनिक को आजतक अपने पहाड़ पर नहीं देखा था. मुझे डर लगने लगा.

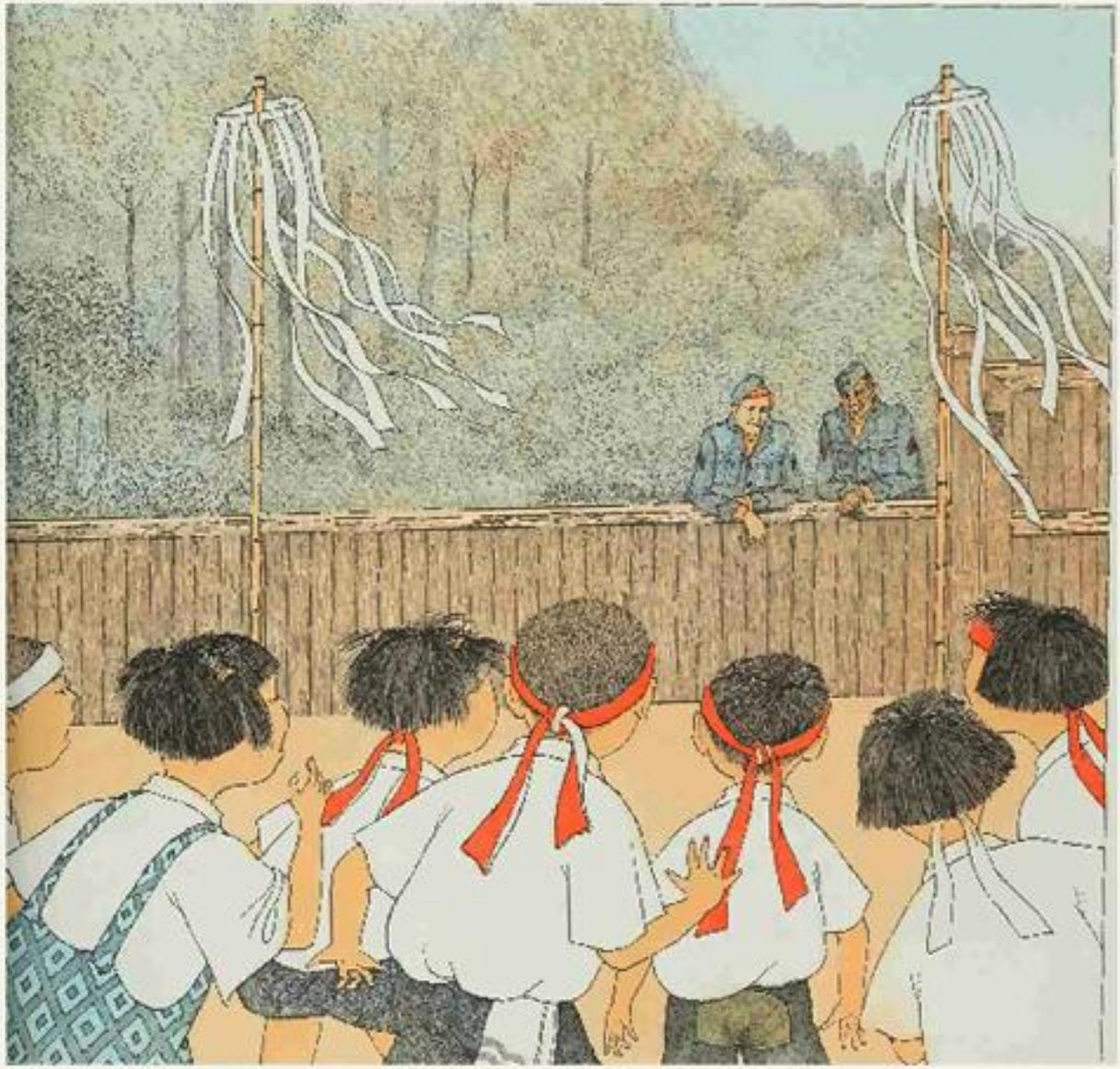

विदेशी मुस्कराये और हमारी और देख कर उन्होंने अपने हाथ हिलाये. जब काला आदमी बाड़ पार कर के हमारी ओर आया तो हम सब थोड़ा पीछे हट गये और उसे घूर कर देखने लगे. जितने भी आदमी मैंने अभी तक देखे थे वह उन सब से लंबा था. और उसके कपड़े! कपड़ों की क्रीज़ कितनी कड़क थी! उसके जूते चमकदार धातु की तरह चमक रहे थे.

वह सैनिक लंबे डग भरता हुआ स्कूल के प्रवेशद्वार की ओर गया जहाँ प्रिंसिपल की साइकिल खड़ी थी. उसने साइकिल की ओर संकेत किया और जजों की मेज़ की ओर घूमा. प्रिंसिपल धीरे से खड़े हुए.

“वह साइकिल चाहता है,” किसी ने कहा.

“शायद उसे पता न हो कि वह क्या है.”

“नहीं, वह इसे चलाना चाहता है.”

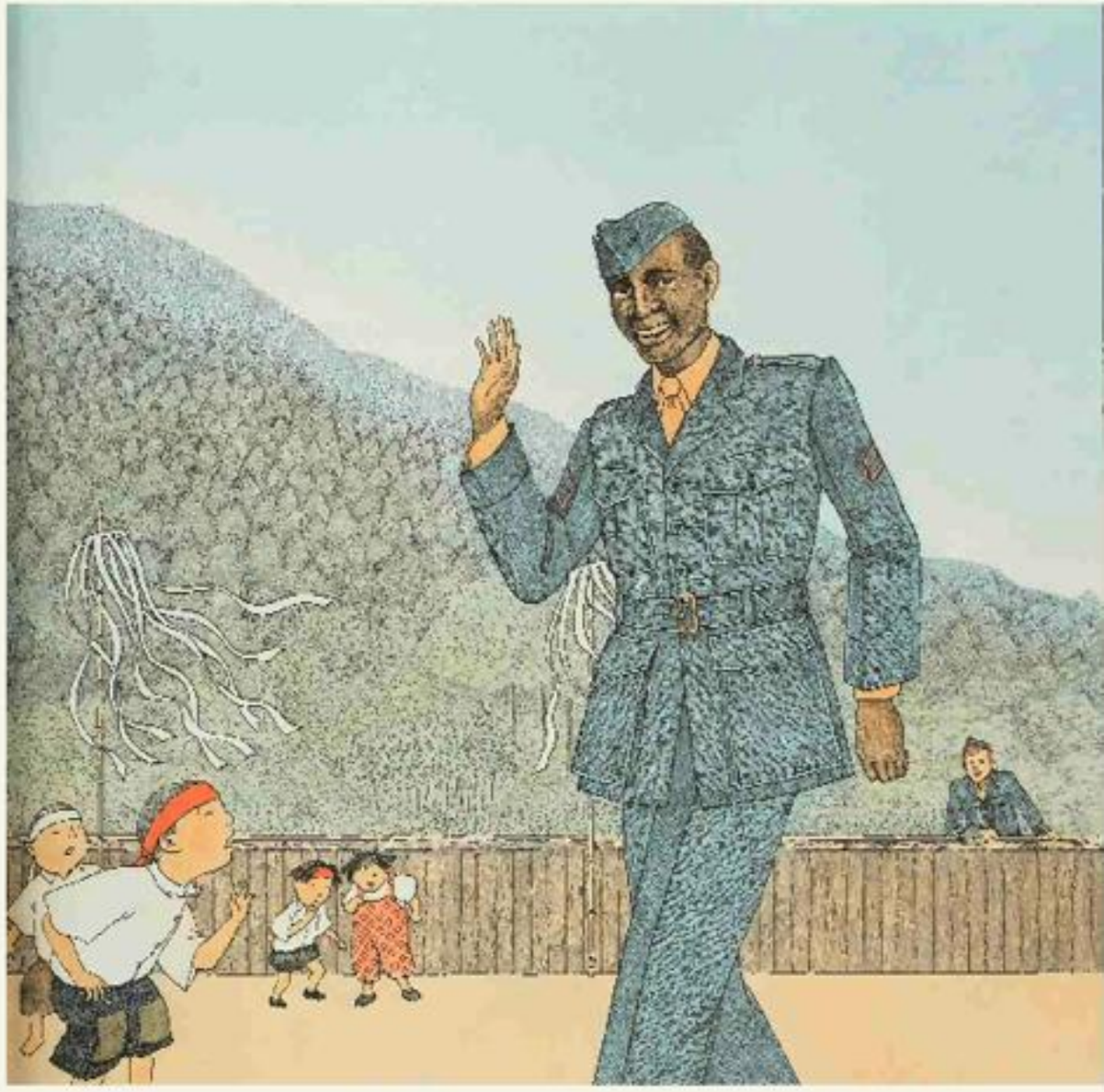

प्रिंसिपल सैनिक के पास आये और झुक कर उसका अभिनंदन किया. ऐसा लग रहा था कि एक छोटा लड़का एक भीमकाय व्यक्ति का अभिनंदन कर रहा हो. सैनिक भी बहुत नीचे झुका, प्रिंसिपल के सिर से उसकी टक्कर होते-होते रह गई. हम हँसने लगे.

वह सिर हिला कर एक-दूसरे से बात करने लगे. प्रिंसिपल ने साइकिल की ओर इशारा किया, फिर उस सैनिक की तरफ, और फिर सिर हिला कर सहमति दी. हाँ, तुम मेरी साइकिल चला सकते हो, लगा कि वह ऐसा कह रहे थे. सैनिक ने अपने हाथ जोड़ दिये और मुस्कराया.

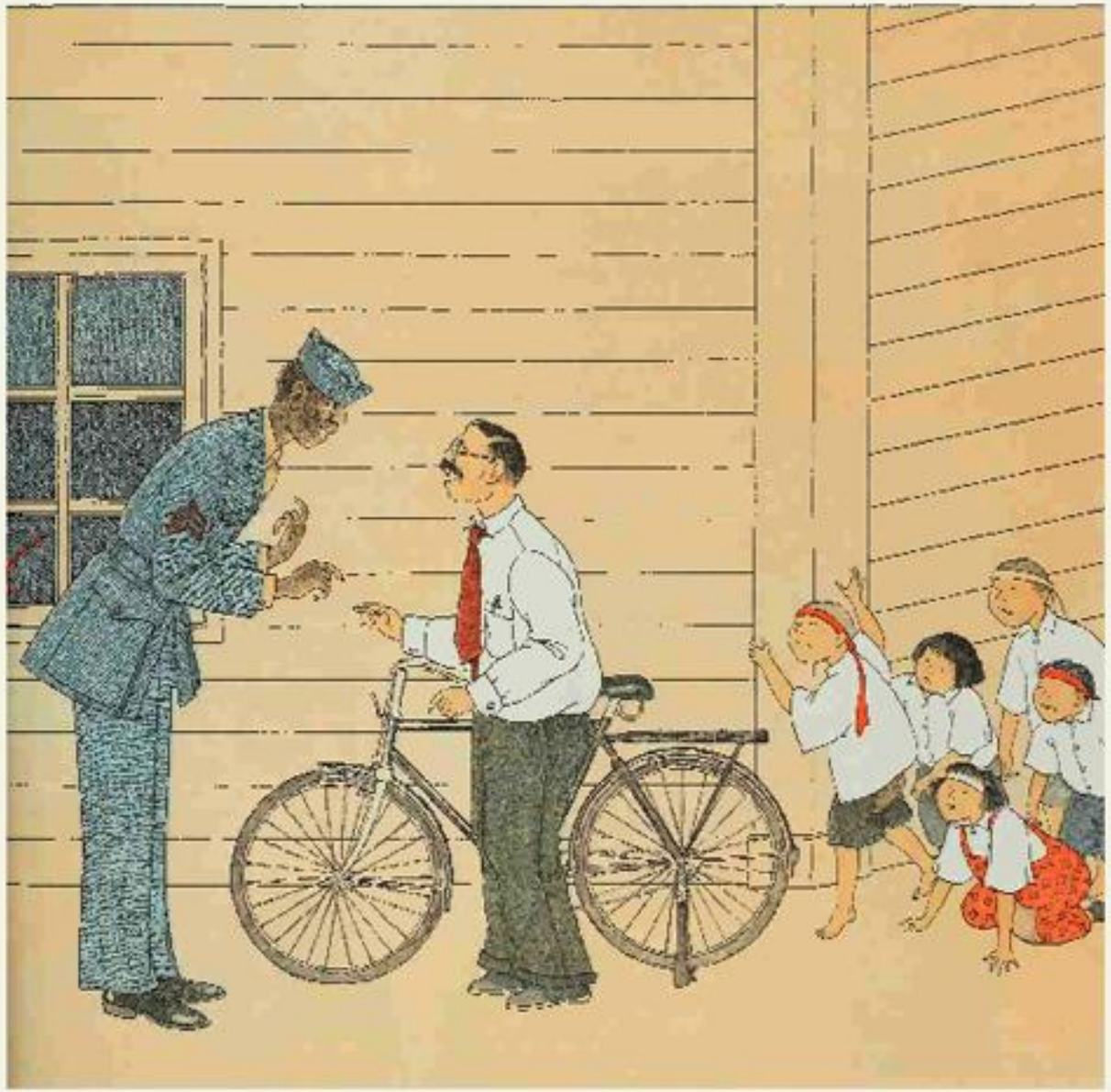

उस आदमी ने साइकिल को हैंडल से पकड़ा, पाँव से किक मार कर स्टैंड खोल दिया और उसे खींच कर खेल के मैदान के बीच में ले आया. उसने हमें पीछे हटने का संकेत किया और अपने मित्र को बुलाया.

दूसरा आदमी भी काले आदमी जितना ही लंबा था. उसने अपनी टोपी उतार ली और झुक कर हमारा अभिनंदन किया. हम हँस दिए और हमने भी उसका अभिवादन किया.

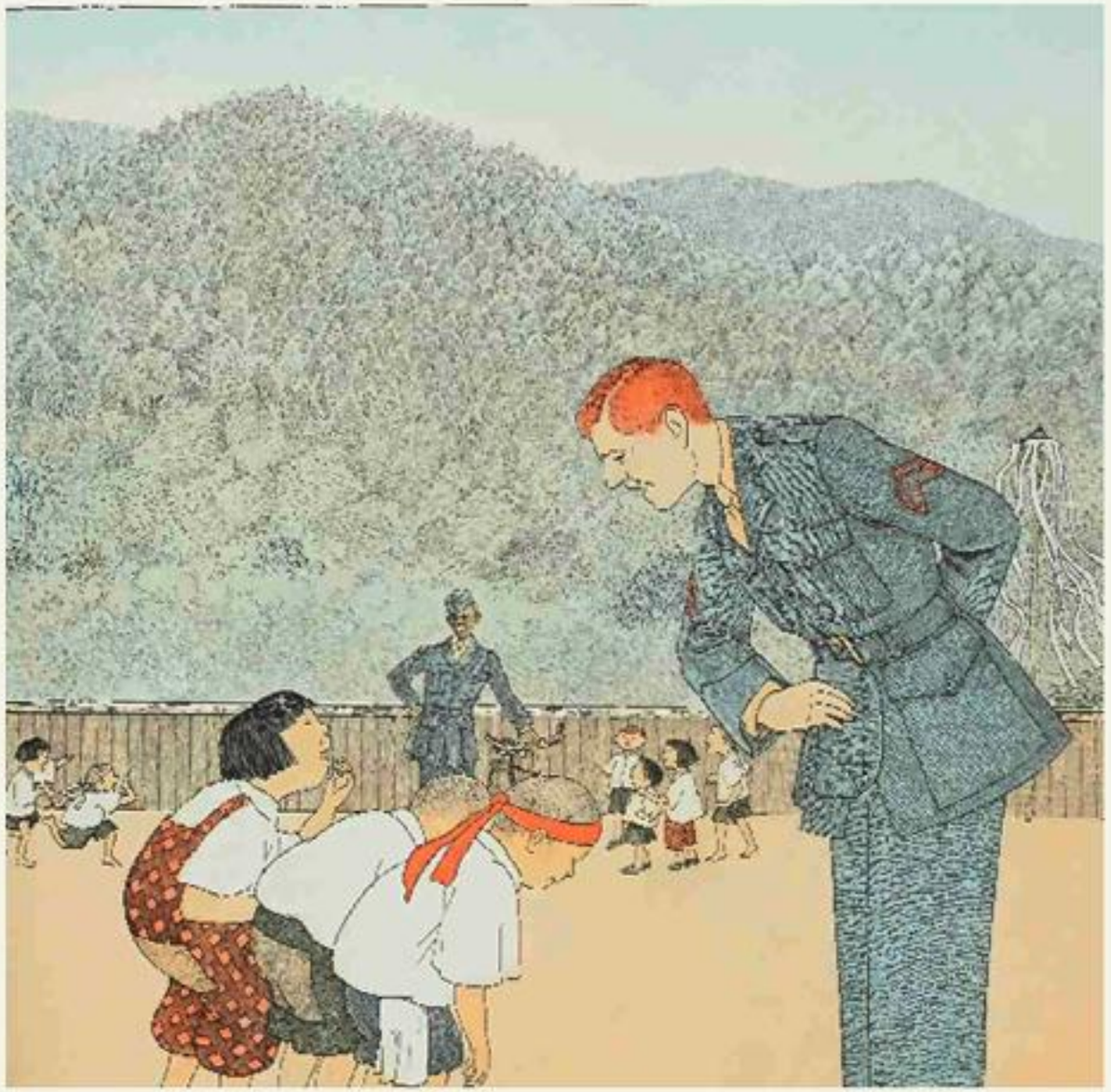

काले सैनिक ने अपनी जैकेट उतार कर अपने साथ को दे दी. फिर अपनी लंबी टाँग उठा कर वह साइकिल पर सवार हो गया. वह साइकिल चलाने लगा. वह गोल-गोल साइकिल चला रहा था और गोले को आकार बड़ा करता जा रहा था. उसका मित्र उसकी जैकेट को एक झंडे समान हिला रहा था और उसे और तेज़ चलाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था.

अचानक साइकिल-सवार ने साइकिल का हैंडल ऊपर खींचा और अगला पहिया ज़मीन से उठ कर हवा में आ गया.

“ओह, देखो!” हम चिल्लाये.

“वह इस तरह कैसे चला रहा है?”

“क्या खिलाड़ी है!” आर्ट टीचर ने कहा.

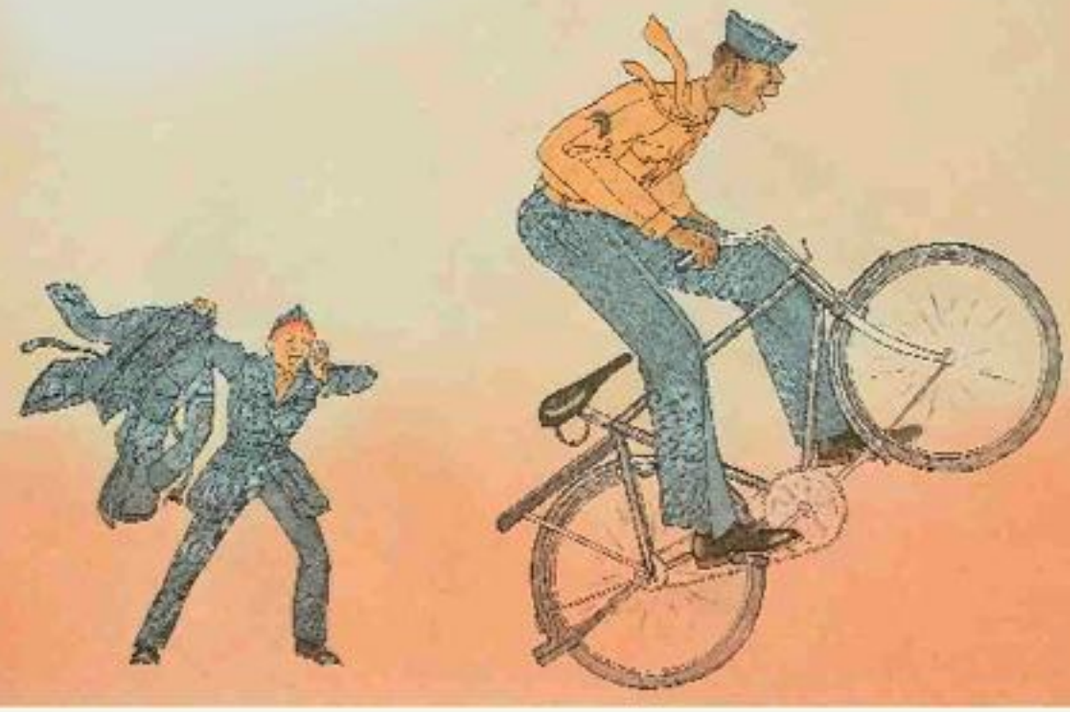

लाल बालों वाला सैनिक रिंगमास्टर था. वह साइकिल के साथ-साथ दौड़ रहा था और अपने साथी को उत्तेजित कर रहा था. साइकिल-सवार एक पहिये पर साइकिल को इधर-उधर घुमाते हुए गोल-गोल चला रहा था. हम सब आश्चर्यचकित थे.

फिर वह साइकिल को उल्टा चलाने लगा!

वह साइकिल पर उल्टा बैठ गया. यह देखने के लिए कि वह किधर जा रहा था उसे अपनी गर्दन मोड़ कर घुमानी पड़ रही थी. एक विशाल नाचते हुए मकड़ी समान उसे अपने हाथ-पाँव चलाने पड़ रहे थे. हम दंग रह गये और चीखने लगे.

उसने साइकिल उलटी चलाई, फिर सीधी चलाई. फिर उस ने अगले पहिये को घूमती हुई जाइरोस्कोप की तरह घुमाया. उसने चिल्ला कर रिंगमास्टर को कुछ कहा और उसके साथी ने साइकिल का कैरियर पकड़ लिया और पूरी ताकत से धक्का देने लगा.

फिर उसने साइकिल छोड़ दी.

साइकिल बड़ी तेज़ गति से चलने लगा. साइकिल-सवार पैडल पर खड़ा हो गया और हैंडल पर झुकते हुए उसने दोनों पाँव उठा कर कैरियर पर रख लिए.

वह हवा में था. उसकी टोपी उड़ गई और नेकटाई हवा में लहराने लगी. ऐसा लगा कि एक विशाल ड्रैगनफ्लाई की तरह वह हवा में उड़ रहा था. “ओह, ओह!” हम चिल्लाये.

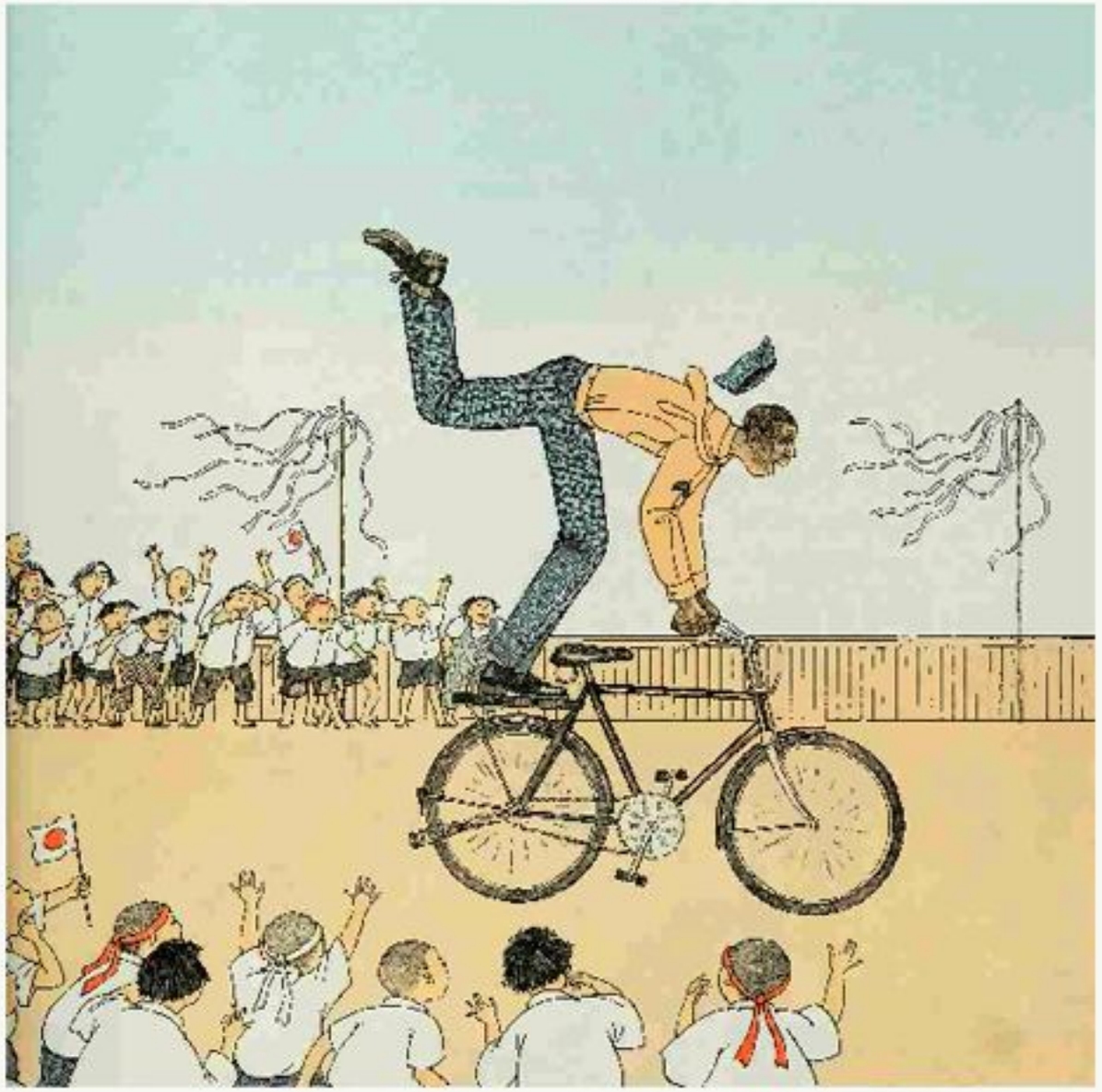

जब आखिरकार साइकिल रुका तो खेल का मैदान तालियों और कोलाहल से गूँजने लगा. साइकिल-सवार हाँफ रहा था और हँस रहा था. रिंगमास्टर भाग कर उसके पास गया और उसे बाँहों में भरकर उठा लिया. उछलते, चिल्लाते हम सब उनके आसपास इकट्ठे हो गये.

भीड़ से जूझते हुए प्रिंसिपल आगे आये. काले आदमी ने आगे आकर उनका हाथ थामा. पुराने मित्रों समान उन्होंने अपने हाथ मिलाये.

हमें शांत करने के लिए प्रिंसिपल ने अपना हाथ उठाया. सैनिक का हाथ पकड़ आकर वह उसे मंच के पास लाये. फिर उन्होंने मिसेज़ मोरिता के कान में फुसफुसा कर कुछ कहा. मेज़ पर रखे पुरस्कारों में से सबसे बड़ा पुरस्कार वह लेकर आईं.

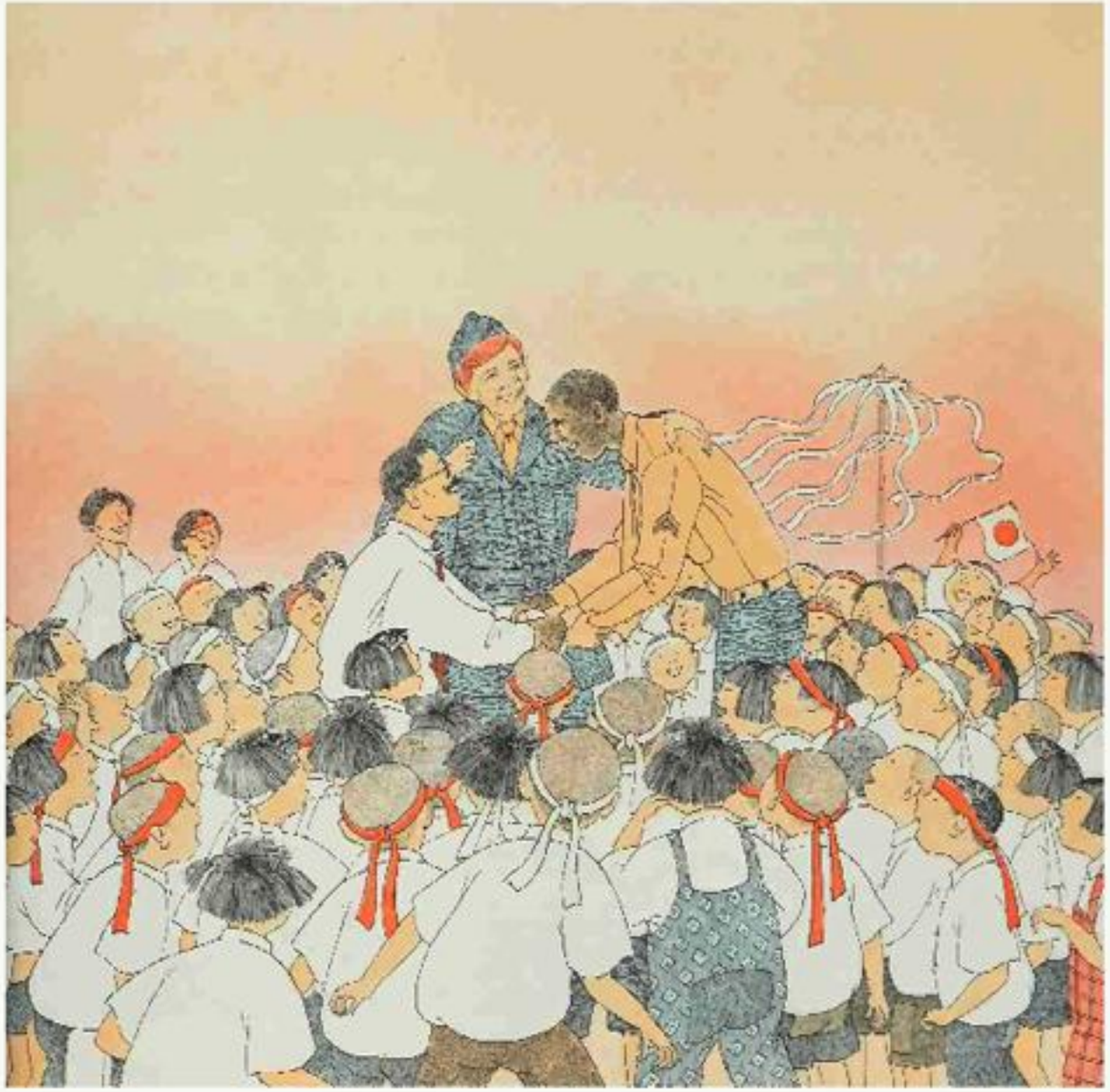

प्रिंसिपल मंच पर खड़े हो गये और पुरस्कार का डिब्बा अमरीकी सैनिकों को दिया. वह एक महान चैम्पियन को पुरस्कृत करते हुए सम्राट समान लग रहे थे. साइकिल-सवार ने अपना पुरस्कार दोनों हाथों में स्वीकार किया और फिर उसे अपने सिर के ऊपर उठाया. फिर वह हम लोगों की ओर घूमा.

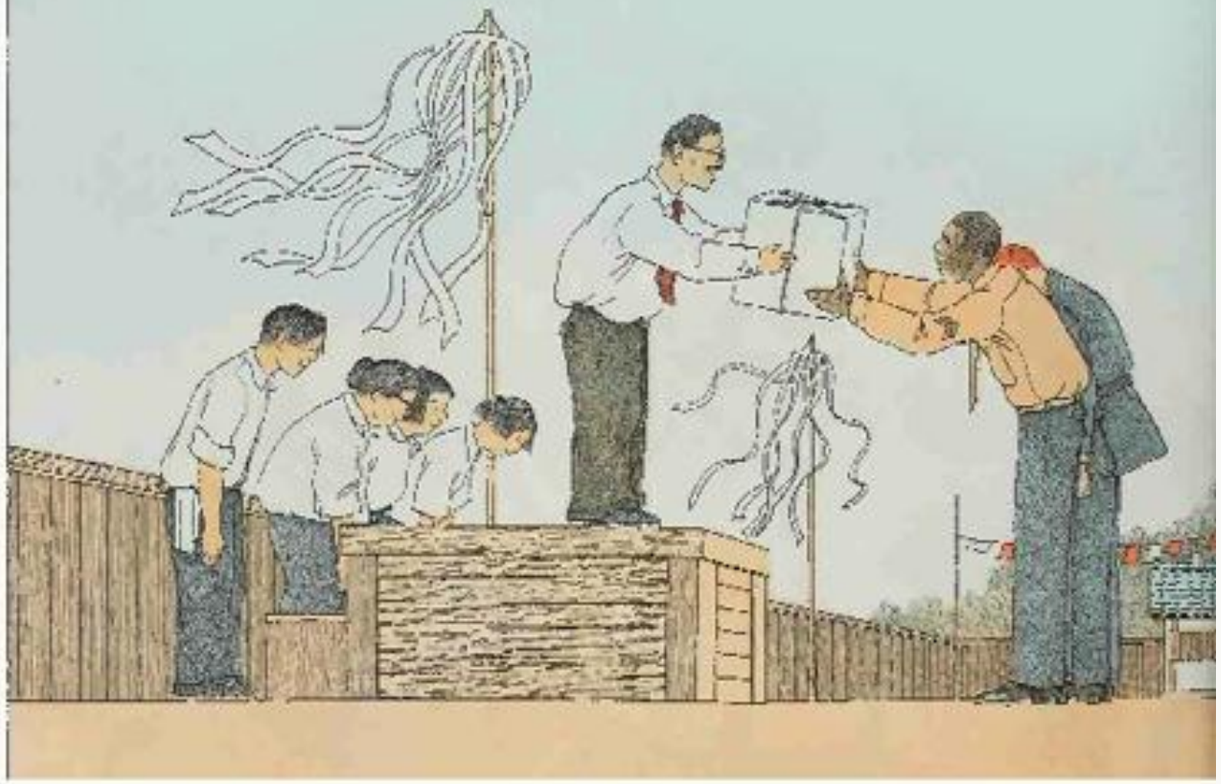

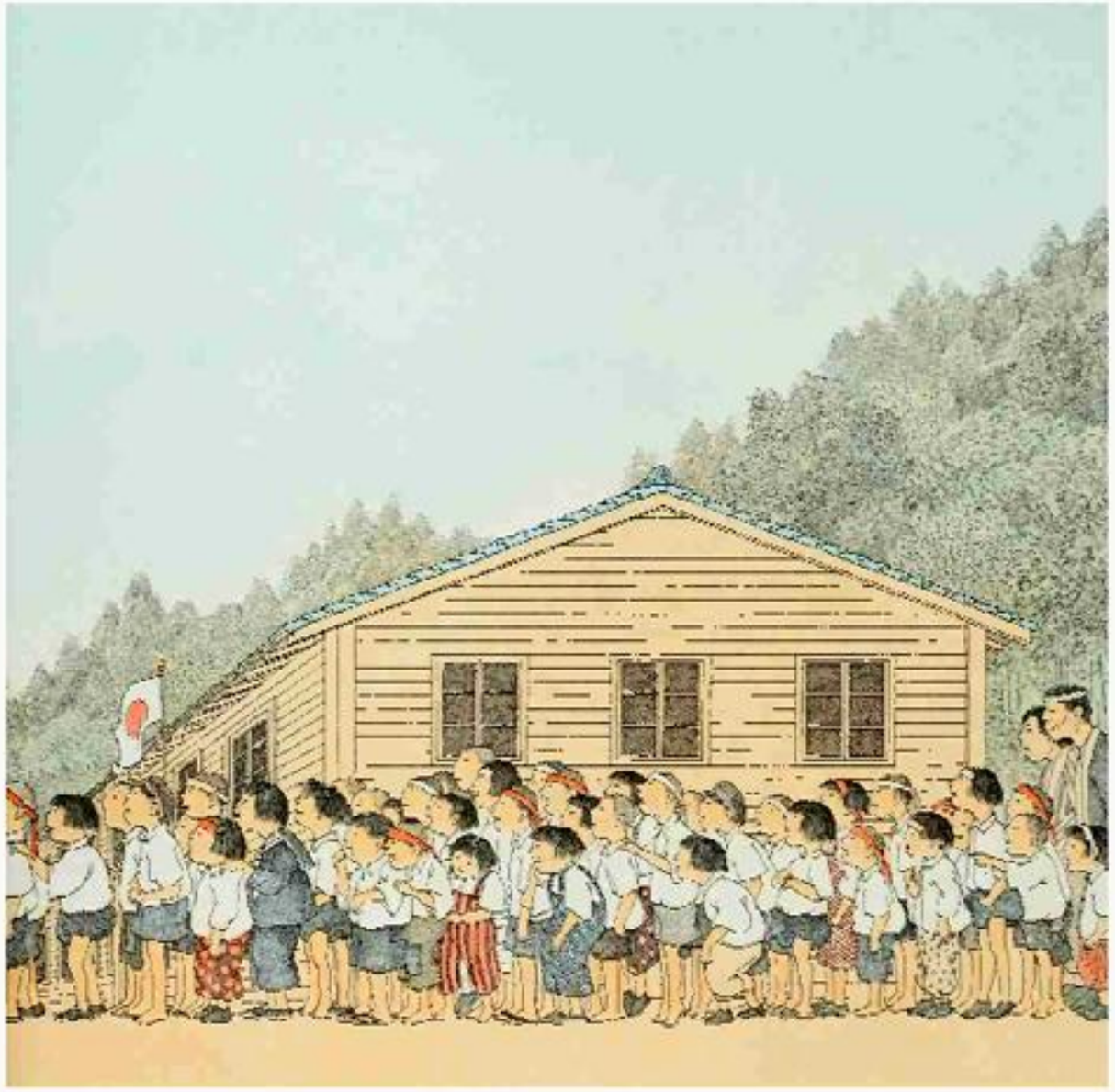

“धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद!” उसने कहा. सब ने झुक कर उसका अभिनंदन किया. सब प्रसन्नता से चिल्लाये.

अमरीकी सैनिकों ने अपनी टोपियाँ पहन लीं और गेट से बाहर चले गये. बांहों में बाँहें डाले वह पहाड़ से नीचे उतरने लगे. वह हाथ हिला रहे थे और हँस रहे थे. हम उन्हें तब तक देखते रहे जब तक कि सड़क पर मोड़ काट कर वह आँखों से ओझल नहीं हो गये.

समाप्त